डॉ॰ ओमप्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

Date
Page 13

विषय- संस्कृत
बी॰ ए॰ स्नातक सेमेस्टर - 1

संज्ञा प्रकरण MJC - I

इस प्रकरण में इत्, लोप, सवर्ण और संहिता आदि संज्ञाओं का वर्णन हुआ है, इसीकारण इसे 'संज्ञा प्रकरण' कहते हैं। किन्तु मुख्य रूप से इस प्रकरण में वर्ण-समुदाय (अल्फाबेट) का विवेचन हुआ है।

अक्षरसमाम्नाय -

महर्षि पाणिनि ने सम्पूर्ण अक्षर-समाम्नाय (वर्ण-समुदाय) को चौदह सूत्रों में वर्णन किया है। ये सूत्र हैं-

(1) अइउण्। (2) ऋलृक्। (3) एओङ्। (4) ऐऔच्। (5) हयवरट्। (6) लण्। (7) ञमङणनम्। (8) झभञ्। (9) घढधष्। (10) जबगडदश्। (11) खफछठथचटतव्। (12) कपय्। (13) शषसर्। (14) हल्। इन सूत्रों को माहेश्वर सूत्र या प्रत्याहार सूत्र भी कहते हैं, क्योंकि इन्हीं के आधार पर 'अण्' 'अच्' हल् आदि प्रत्याहार बनते हैं।

प्रत्याहार बनाने का नियम -

सूत्र या समुदाय के अन्त में आने वाले इत्संज्ञक (सामान्यतया हलन्त) वर्ण को जब उसके किसी पूर्ववर्ती वर्ण से मिला दिया जाता है, तब 'प्रत्याहार' बन जाता है। वह प्रत्याहार उस अन्त्य हलन्त वर्ण को छोड़कर आदि तथा मध्यवर्ती वर्णों का बोधक होता है। उदाहरण के लिए प्रत्याहार सूत्र 'अइउण्' में अन्त्य इत्संज्ञक णकार को पूर्ववर्ती अकार के साथ मिलाने से 'अण्' प्रत्याहार बन

जाता है। यह अण् प्रत्याहार आदि 'अ' और मध्यवर्ती 'इ' और 'उ' का बोधक है।

वर्णों के भेद-

वर्णों के मुख्यतः दो भेद हैं- स्वर और व्यञ्जन। प्रत्याहार शैली में इन्हीं को क्रमशः 'अच्' और 'हल्' कहते हैं। स्वर (अच्) का अभिप्राय उस वर्ण से है जिसका उच्चारण अपने आप हो सके- 'स्वयं राजन्ते इति स्वराः'। जैसे- 'अ', 'इ' आदि। व्यञ्जन (हल्) उसको कहते हैं जिसका उच्चारण बिना स्वर के सम्भव नहो, जैसे- क्, ख् आदि। यहाँ 'क' (क्+अ) का उच्चारण स्वर 'अ' की सहायता से ही होता है। शुद्ध व्यञ्जन, यथा क्, ख् आदि का उच्चारण नहीं हो सकता। व्यञ्जन के इस स्वर रहित शुद्ध रूप को प्रकट करने के लिए उसके नीचे तिरछी रेखा (्) लगा देते हैं।

स्वरों के भेद-

स्वर तीन प्रकार के होते हैं: ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत। स्वर के उच्चारण में यदि एक मात्रा का समय लगे तो उसे 'ह्रस्व' (जैसे- 'अ', 'इ') और यदि दो मात्रा का समय लगे तो उसे 'दीर्घ' (जैसे- 'आ', 'ई') कहते हैं। यदि तीन मात्रा का समय लगे तो 'प्लुत' कहलाता है। इस प्रकार के स्वर का प्रयोग प्रायः पुकारने में होता है, यथा- राम३। पुनः इन तीनों प्रकार के स्वरों को उदात्त, अनुदात्त,

और स्वरित इन तीन भेदों में बाँटा जाता है। अन्त में इन सभी प्रकार के स्वरों के दो अन्य भेद होते हैं – अनुनासिक और निरनुनासिक। अनुनासिक उस स्वर को कहते हैं जिसके उच्चारण में नासिका से भी सहायता ली जाती है - यथा- एँ, आँ आदि। जिसके उच्चारण में नासिका से सहायता न ली जाए, उस सादे स्वर को 'निरनुनासिक' कहते हैं। जैसे- ए, आ आदि। इन सभी भेदों को निम्न चक्र के माध्यम से भलीभांति समझ सकते हैं-

स्वरबोधक चक्र

अ इ उ ऋ लृ	अ इ उ ऋ ए ओ ऐ औ	अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ
1. ह्रस्व-उदात्त-अनुनासिक	(7) दीर्घ-उदात्त-अनुनासिक	(13) प्लुत-उदात्त-अनुनासिक
2. ह्रस्व-उदात्त-निरनुनासिक	(8) दीर्घ-उदात्त-निरनुनासिक	(14) प्लुत-उदात्त-निरनुनासिक
3. ह्रस्व-अनुदात्त-अनुनासिक	(9) दीर्घ-अनुदात्त-अनुनासिक	(15) प्लुत-अनुदात्त-अनुनासिक
4. ह्रस्व-अनुदात्त-निरनुनासिक	(10) दीर्घ-अनुदात्त-निरनुनासिक	(16) प्लुत अनुदात्त निरनुनासिक
5. ह्रस्व-स्वरित-अनुनासिक	(11) दीर्घ स्वरित अनुनासिक	(17) प्लुत स्वरित अनुनासिक
6. ह्रस्व-स्वरित-निरनुनासिक	(12) दीर्घ स्वरित निरनुनासिक	(18) प्लुत स्वरित निरनुनासिक